

१३

ओलीदी नामदेवन ओलीदी

2579

१०

ॐ ह्रीं दी ॐ नमो ॐ नमो

2579

दिनमहादेववायनमः॥ ॥द्वयाखवस॥ॐ ह्रीं मंहकालुहेनवायनमः॥ ॥द
थूस॥ॐ ह्रीं अक्षयकायनमः॥ॐ ह्रीं अनासनायनमः॥ॐ ह्रीं कदासनायनमः॥ॐ
ह्रीं नानासनायनमः॥ॐ ह्रीं यत्रासनायनमः॥ॐ ह्रीं कणायाय२॥ॐ ह्रीं कर्णिकासना
यनमः॥ॐ ह्रीं यद्रासनायनमः॥ॐ ह्रीं प्रतासनायनमः॥ॐ ह्रीं वृषासनायनमः॥ॐ
ह्रीं धर्मायनमः॥ॐ ह्रीं ज्ञानायनमः॥ॐ ह्रीं वेनाज्ञायनमः॥ॐ ह्रीं वैश्यायनमः॥ आ
मेपादि शीघ्रानार्त्त॥ ॥ॐ ह्रीं अधर्मायनमः॥ॐ ह्रीं अज्ञानायनमः॥ॐ ह्रीं अव
राज्ञायनमः॥ॐ ह्रीं अनैश्यायनमः॥पूर्वादि शीघ्रानार्त्त॥ ॥ध्यान॥ॐ ह्रीं
कवकं विनर्त्तव नागकुलमष्टिना॥उठाहुटंगविबूतं धनवर्द्ध सुप्रजम्॥

धातुं रुजं कयालीव. टाडुवः यनमध्वरं उद्धवाह नृत्तयन्था. उमन्निष्ठुनम
 वयः॥ त्रिदंष्ट्रीसुनवर्जं व. कलिकाञ्जुमालिका॥ नथवामं नृत्तयन्था. स्वदाङ्ग यन्म
 बवः॥ नागंधनूत्तथयः॥ कयालीवकमः॥ सहस्रसूर्यसंकासं. कालकिर्नाञ्जन
 ४५०॥ वृषासुनसमाह्वयं. नृत्तयन्था नृत्तयन्था॥ नृत्तयन्था नृत्तयन्था. सर्वलोकान्साकिर्नं॥
 एवम्॥ लामहादव. नाद्यकार्यसुसिद्धिदं॥ मानवानां हितायै. सर्वदः खविभाजनं
 ॥ नृत्तयन्था नमः॥ त्रियाञ्जलिमूलमनुष्यकाय॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्री नृत्तयन्था नमः॥ नृत्तयन्था
 ययादकी॥ ३॥ यत्तं गनसंयुज्य॥ यानिमूर्धादर्शयन्॥ नृत्तयन्था नमः॥ ॥ यत्तं
 ॐ ह्रीं वामाय नमः॥ ॐ ह्रीं अक्षयै नमः॥ ॐ ह्रीं नोदायै नमः॥ ॐ ह्रीं काल्यै नमः॥

ॐ ह्रीं कलविकर्णिकाय नमः॥ ॐ ह्रीं वलयथय नमः॥ ॐ ह्रीं सर्वरूपाय नमः॥
ॐ ह्रीं मनामय नमः॥ ॐ निपूर्वादि षोडशानां कर्णिकायां॥ ॥ ॐ ह्रीं षोडशायः
नमः॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः॥ ॐ ह्रीं क्रियाय नमः॥ मध्ययुजनं॥ ॥ ॐ ह्रीं सदा
ज्ञाय नमः॥ ॐ ह्रीं वामदवाय नमः॥ ॐ ह्रीं अध्यानाय नमः॥ ॐ ह्रीं ननुनूवा
य नमः॥ ॐ ह्रीं षोडशानाय नमः॥ ॥ मध्ययुजनं॥ ॐ ह्रीं वा तां किं षे नमः
॥ ॐ ह्रीं वा कां किं षे नमः॥ ॐ ह्रीं मां सां किं षे नमः॥ ॐ ह्रीं वा
हां किं षे नमः॥ ॐ ह्रीं यां किं षे नमः॥ ॐ ह्रीं हां किं षे नमः॥ ॐ ह्रीं
पूर्वादि षोडशानां॥ ॥ ॐ ह्रीं हठकाय नमः॥ ॐ ह्रीं त्रिपुनानकाय नमः॥

ॐ ह्रीं अग्निवगाय नमः॥ ॐ ह्रीं अग्निजिह्वाय नमः॥ ॐ ह्रीं कालाकाय नमः॥ ॐ ह्रीं
कलालीनाय नमः॥ ॐ ह्रीं प्रकयादाय नमः॥ ॐ ह्रीं हीमनूयाय नमः॥ ॐ ह्रीं त
मनूयगाय नमः॥ ॐ ह्रीं कर्मयुक्ताय नमः॥ ॐ ह्रीं पूर्वादि षोडशानां॥
ॐ ह्रीं वन्द्यमण्डलाय नमः॥ ॥ ॐ ह्रीं सूर्यमण्डलाय नमः॥ ॐ ह्रीं अग्निमण्डला
य नमः॥ मध्य॥ ॥ ॐ ह्रीं जलवदाय नमः॥ ॐ ह्रीं यज्ञवदाय नमः॥ ॐ ह्रीं सामवदा
य नमः॥ ॐ ह्रीं अथर्ववदाय नमः॥ ॐ ह्रीं पूर्वादि षोडशानां॥ ॥ ॐ ह्रीं कनयुगाय
नमः॥ ॐ ह्रीं कनयुगाय नमः॥ ॐ ह्रीं दायनयुगाय नमः॥ ॐ ह्रीं कलियुगाय न
मः॥ ॐ ह्रीं आनयादि षोडशानां॥ ॥ ॐ ह्रीं वक्रायणी अग्निनाक नवाय नमः॥

ॐ ह्रीं कं मा हृष्यतु नवाय नमः॥ ॐ ह्रीं वं कामालि वृद्ध नवाय नमः॥ ॐ ह्रीं नं वे
 सुवाकाध नवाय नमः॥ ॐ ह्रीं नं वानादि उन्नमक नवाय नमः॥ ॐ ह्रीं यं वृद्धा
 यणीकयात्रिस नवाय नमः॥ ॐ ह्रीं यं वामा रुषल नवाय नमः॥ ॐ ह्रीं सीमा
 हलक्षीसंहार नवाय नमः॥ पूर्वोदि वृषीष्टम नमः॥ मध्यं॥ दक्षिणं॥ वायुं॥
 ॐ ह्रीं न्मा लूच्छाय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं अन्नय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं मयमाय नमः
 ॥ ॐ ह्रीं न्मा नं मयमाय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं
 न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥
 ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥
 ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥ ॐ ह्रीं न्मा नं वनय नमः॥

[illegible]

हा॥ ॐ ह्रीं कास्वस्तानकयया लायवल्लिष्टक २ स्वाहा॥ ॐ ह्रीं क्रीं गान्धर्वनमस्तु
हेनवायवल्लिष्टक २ स्वाहा॥ ॐ ह्रीं नृयध्वनमस्तु हेनवाय ३ नोदानिनोदाय
युदिकदीकाय यग्नकाये कसमयुकाय नद्यथा हन २ द २ ह २ यव २ मथ २
कन २ क्षिन् २ क्षिन् २ यनकर्त यनकायिनं यनद्विर्तद्वर्त द्विर्तानिर्त
सर्वसत्वयम् २ स्वाहि २ यनमनुष्याय २ अग्निर्तुकाय २ यग्नयग्नस्तु २ गन्तु
ननिपतन्तु सपुत्रसर्वाधर्वाय २ वीर्यमयाय २ धृपदीय यज्ञायवीता २ अ
लिवल्लिष्टिर्तुमांवल्लिष्टक २ उरू २ मूरू २ खख २ स्वाहि २ मदाअमनाधि

यनय मलानृय नृयाय क्रमस्वक्रमस्वायनाधनम ४ हू हू ३ स्वाहा॥ ॥ थना
संपुद्राय पूजायाय ॥ गाल ॥ ॐ ह्रीं नयनासमूहयनालायनम ४॥ ॥ अवसिस ॥
ॐ ह्रीं नन्दिमंजुलायनम ४॥ ॥ खवसिस ॥ ॐ ह्रीं मंमहाकालायनम ॥ ॥ यागमस
ॐ ह्रीं कंकागल्यायनम ४॥ वदलिस ॥ ॐ ह्रीं कंकदलिसिंहान्ननम ४॥ खनावद
ॐ ह्रीं नंनान्नसिंहान्ननायनम ४॥ गहस ४॥ ॐ ह्रीं कंसधनायनम ४॥ गाल ॥ य
ॐ ह्रीं कंकालमूकयु निर्वजनयदाकायनम ४॥ ॥ वायसस ॥ मूनमनुन
मठं जेग ॥ थनसुद्राय पूजा ॥ ॥ वल्यार्वन ॥ सानिवलि ॥ लोकमारावनि
नधूनक ॥ धूप दीप नैवेद्य जाय मुनिर्गार्धक ॥ यष्टुशुदना ४॥

लामयका ॥ ॥ नगाया खनभाया उजा आदिनी नमालाव स्वनि कथा
 याव स्वनि कसतय मय्यालनय बलयतिवा प्रका युका मल निर्व
 कनयाय ॥ दिय लाहनका ॥ अरुमरुण धादनी ॥ अर्ययाशदकनी ॥ निविद
 णादि वडुसस्मान सज्जननलाय वन णिधन सज्जन भादनि थनधूडा
 व ॥ ॥ व्याखनभायायालाहनस वायन मय नालउजा वनन स्व
 सि कथाय ॥ ॥ व्यायन आदिनी विगर्जनयाय ॥ ॥ विन सिधन साननय ॥ ॥ यूर
 न नृयखन मूलखतं गणसीयूक ॥ ॥ आवाक ॥ ॥ वंदनादनयूषीनम ॥ ॥
 नादानस

नव द्वाय सि ता वरु थाम गच्छ आ वृम व्यायगल द्वाय नृमाकाव ॥
 मूलमययदलयावविय ॥ ददि ॥ नसीकाय व्याखनमाविय ॥ थनधूनकाव ॥
 सरुयाय अनतिनगमल ॥ नायदाल ॥ पुनिष्ठा मृगया व्याखनश कद्रयक ॥ पु
 वडाशक खाडान द्रयमाल ॥ ॥ नगा आचार्ययूजा ॥ ददि ॥ गुनूयना ददि
 ॥ वावन ॥ वलिथाय ॥ ॥ दवसक सानका कायाव सानविय ॥ समय विथ
 ॥ कुवाडाव अखाल ॥ धमातल थल ॥ लखन कथा ॥ मिर्गविय ॥ स्व ३ व्याखन
 सडाथायस दव द्वाय ॥ ॥ समय वयनथियक ॥ ॥ व्यायनमाय ॥ वृनिद्यावल
 सिद्धिविधि ॥ समार्क ॥ ॥ ॥ ॥

नवा ना दिना थयि सुर्व ॥ ॥ स्वविनामयि ॥ ॥ ॥

विन लन हा छय ॥ अकन का पाव ऊपुय ॥ मनु ॥

१ॐ दूँ को की वूँ कूँ कनू हनू प म हा ले न वाय सान ॥ कि स हि ना य नू
व न ने र आ ग कू वूँ २ वे ध य र सा हा ॥ थ म नु न भा उ ह ऊ प न य ॥ ना ॥ का
स ऊ प न प ॥ दू य य स ऊ प न प ॥ थ न धू दा व ॥ बि ॥ ता ल ॥ रि वं दू ॥ ति लि
स पु दा य हा य ॥ प्या ख न रु य क ॥

न ना खान ॥ ॐ दूँ प्र क व कं वि न गुं व, ना ग कू हू त म भि तं ॥ ऊ क ठा रू त ॥ जि
रू ॥ सि न व लूँ स जा क ली ॥ पा उ भ नू रू क पा ला कू रू न, ता हू वं पु न म धू रू न ॥
उ उ वा रू नू लूँ रू प ॥ उ म लूँ ति हू ल भ व व ॥ ति द हू स न व रू व, क लि का
अ क मा लि का ॥ न था वा रू नू लूँ रू प ॥ ख दू रू प द म भ व व ॥ ना ग ध नू रू थ य नू क पा

१ॐ नमः ॥ श्री नू लु ना थ य ॥ न ना क नू लु ना थ वि धान ॥ १ ॥ दू थू का दू स क ल ड लूः
सि या डा व ख लि सान व स रु ला व प्र क रु का या डा व वा न्य ॥ स नि क दू सान ॥
ना गि स पू जा दू डा व व न ॥ मू ल ना ध ध व न यं वा य हा न यू जा या य ॥ धू य दी
प जा य सु नि र्थ धू न क ॥ अ य दू या य क ॥ य हू न य न ॥ ॥ थ न धू का व
॥ क नू ल वि य माल का पा न वा डा व द व स क स्व रू क न या व ना सि व क
ग न खा या व प्या ख न या अ नू मा न म का न ल रू य प्या ख न भा क न ल या ग दू
थ व थ व स रू य आ वा रू य रू रू कान ॥ शु फ न थान लि दू का स न म थि य क
रू वा डा व यं न रू स वा थाला व मू ल स उ म लू ल थाला व ल रू व न
वृ षा स न स मा नू रू नू लू जी न न स य न ॥ ह न रू नू लू य न स रू व ल का ल सा हि ती ॥

स सि डि डि डि डि

नू रू वं वा वा म हा द व ना य का रू य

नू रू वं का म उ लू स रू ज स रू य सि

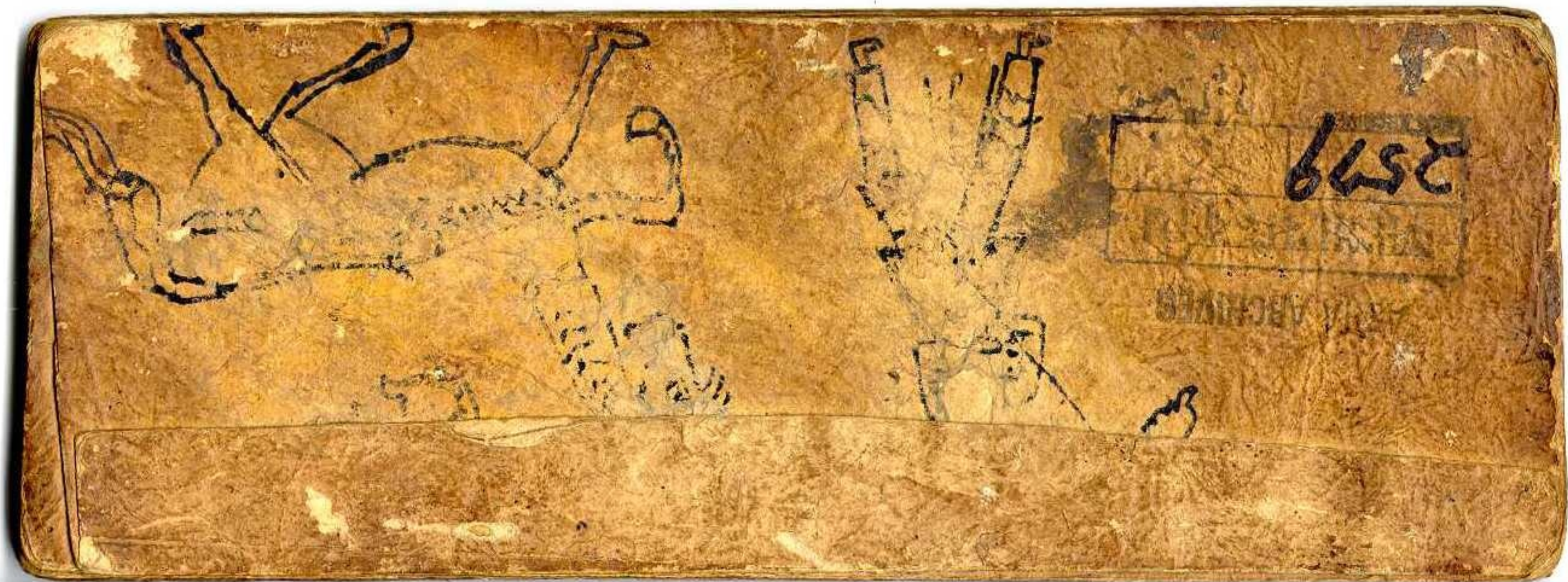
का से का ले रि ना प्र न य रू

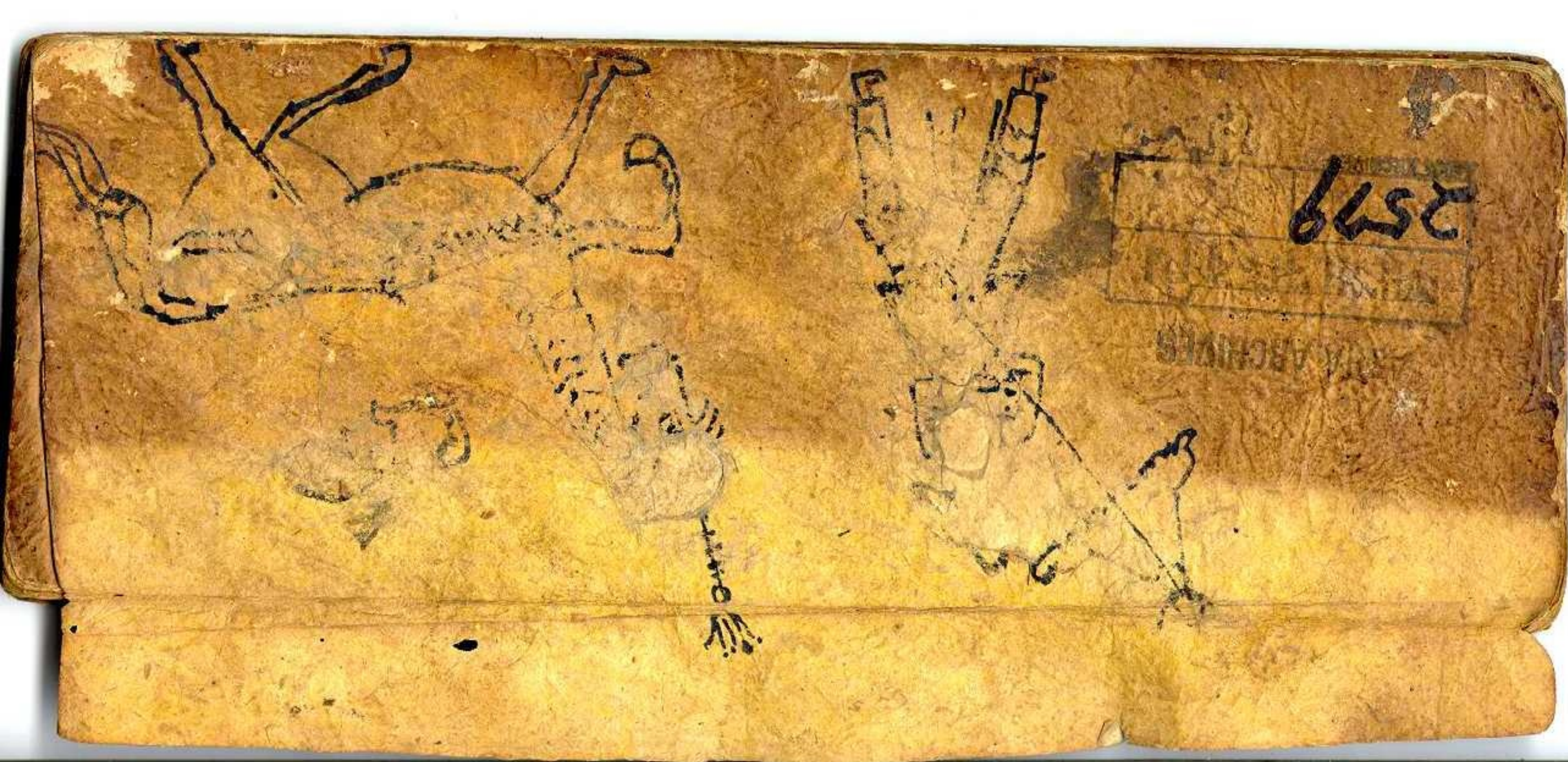
ॐ नमः पद्मवासिनाय ॥ संयदाय पाना पद्मवासिनयायाव ॥ नाल वदुलि
स्वि व्याखनया अनूपयन संयदायथास ॥ स्वमलुलसं कवा वायाव व
न सिधन ऊऊमका खानकायाव ॥ नाधियाव ॥ न्यास ॥ योजन ॥ त्रिदव ३ ॥
ऊवला मलुलस ॥ ॐ हूं नदि नमहा र्हे नवायनम ॥ त्रिया ऊरलि ॥ खवलामः
लुलस ॥ ॐ हूं ममहा कालमहा र्हे नवायनम ॥ ४ ॥ त्रिया ऊरलि ॥ दथूस ॥ ॐ हूं
अनकासायनम ॥ ॐ हूं स्कंदासायनम ॥ ॐ हूं नानासायनम ॥ ॐ हूं अक
लासायनम ॥ ॐ हूं यद्वासायनम ॥ ॐ हूं यनासायनम ॥ ॐ हूं कणासायन
नम ॥ ॐ हूं कर्णिकासायनम ॥ ॥ ॐ वृषासायनम ॥ त्रिया ऊरलि ३ ॥

ॐ हूं हूं धीमहानृष्यध्वन र्हे नवाय हूं धी नृष्यलक्ष्मी सहितायनम ॥
षठं ध्वनसी ध्वी यऊ ॥ आवाहनादि ॥ या ध्वी निमूर्द्धादर्धयन ॥ नाल आ
दिनयऊया धूय ॥ धूय दिय ॥ जाय ॥ हूं हूं ॥ साहा ॥ सुनि ॥ धी सर्वलो नि
दव ॥ नृष्यध्वलगा न अमूकना न कस्य कनूणसिद्धि कामनार्थ धीनिर्ध अ
गधदि ॥ धनधूनकाव ॥ व्याखनभा लासलाव दवाडाव ॥ निर्वंदूनयाय ॥ दिय
आहवका सल्लावाय ॥ ॥ आधार्वादि ॥ ॥ यनिस्त्रा ॥ धनधूनकाव ॥ वडसं
स्क्रान ॥ त्रिनलनसाधनय ॥ अरुनकायाव ॥ अयलथ ॥ मनु ॥ ॐ हूं यमाय द
लुहसाय सर्वसमाय हूं हूं हूं यंयंयंनम कनूणनृष्यमहा र्हे नवाय ह्यानग

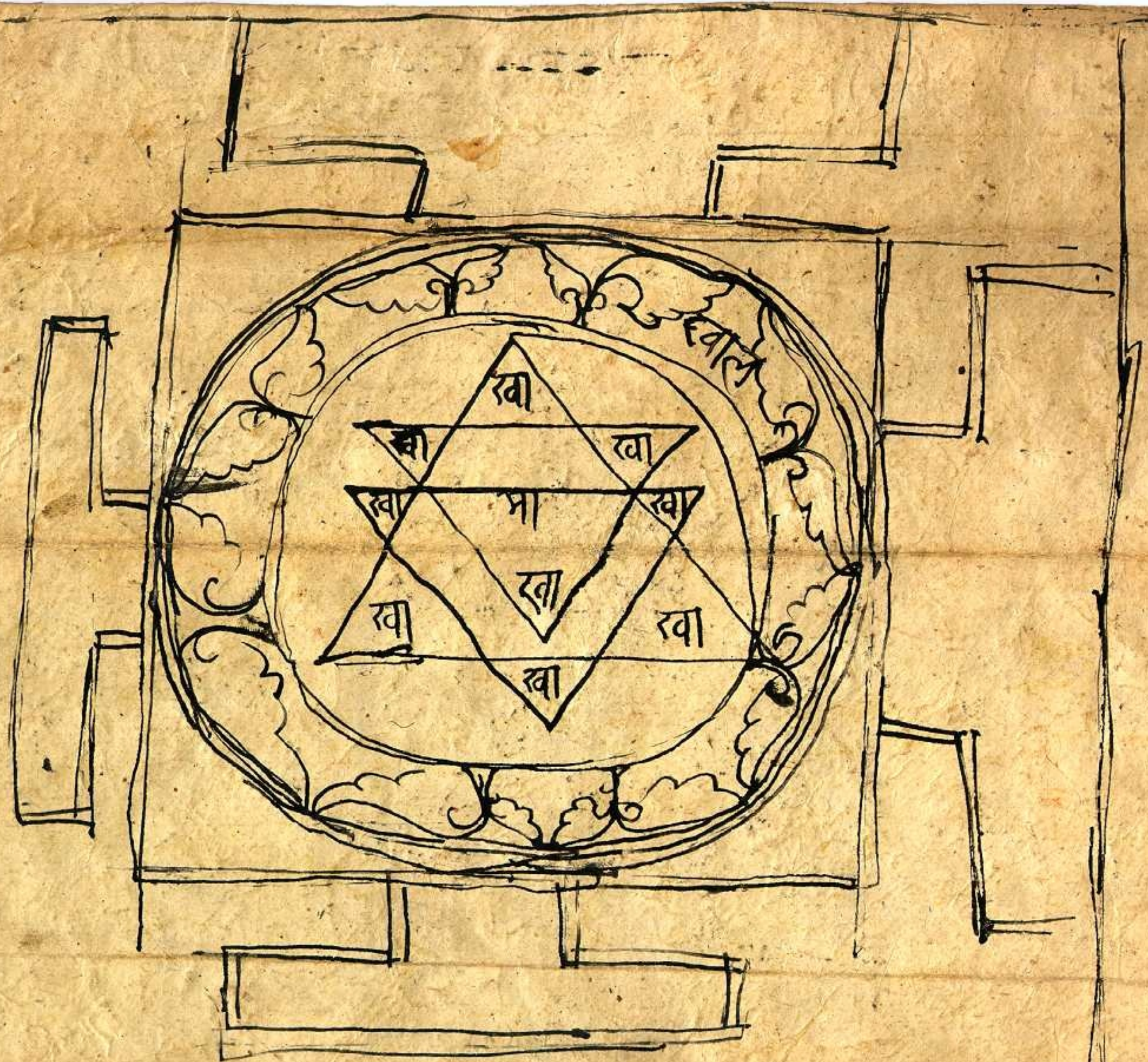
किं सदिनाय ज्वननश्चारा ॥ अथर्वन भादसं जयनथ ॥ नानिका सं जय
नथ ॥ रुदयसं जयनथ ॥ नादनथ ॥ अथर्वनडाव ॥ नाव वहुलि ॥ सिं ॥ सयदा
य द्वाय ॥ या खनरु यक ॥ नाध्वन समनाविय कनकाय लिहावनडाव स्वा
नविय मण्डलविसर्जन ॥ मंठलयास्नानकायाव विय ॥ अथर्वनकाव नृयध्व
नसर्कडाव समय द्वाय ॥ दक्षिणयावक ॥ समयविय ॥ स्नानकाका
याव स्नानविय ॥ विधिथधूनकी ॥ ज्ञानिकलूणसिद्धिविधिसमार्य ॥ छरुम
सुसर्वदा ॥ ॥ सम्वत् ८०० ॥ योषक एकादशिक द्वाधूनका ॥ जयनाम आ
चार्य वायाशुनां ॥ सिद्धया ॥

गनीना ॥ ॥ य ॥ सदन कमलदल लायनि आवमायि वृजनलनादख
मायनी ॥ ॥ कनियेननालं काचुनिकोचु वावियनयकुलि लायदेस
हसडा नग्यालिनि नागलायनि ॥ १ ॥ अथ २ धनूयीचुनंदेनंद
कनगयि कमनहि नायि कालग्याल नंदइका धानामधूनसिधनुवडाडा
य ॥ २ ॥ पुनसिपु पुष्यकिमाला गुथिग्यालिनि यही लाय माधेमरुकवड
निमाला कंदलसनकन लाय ॥ ३ ॥ वनसगकुसुमदेव मुनिरुनषितमे
कृष्टजकीनानी कषुवातपुरुनसिकसिनामनी लानगवकुनधायि ॥ ४ ॥



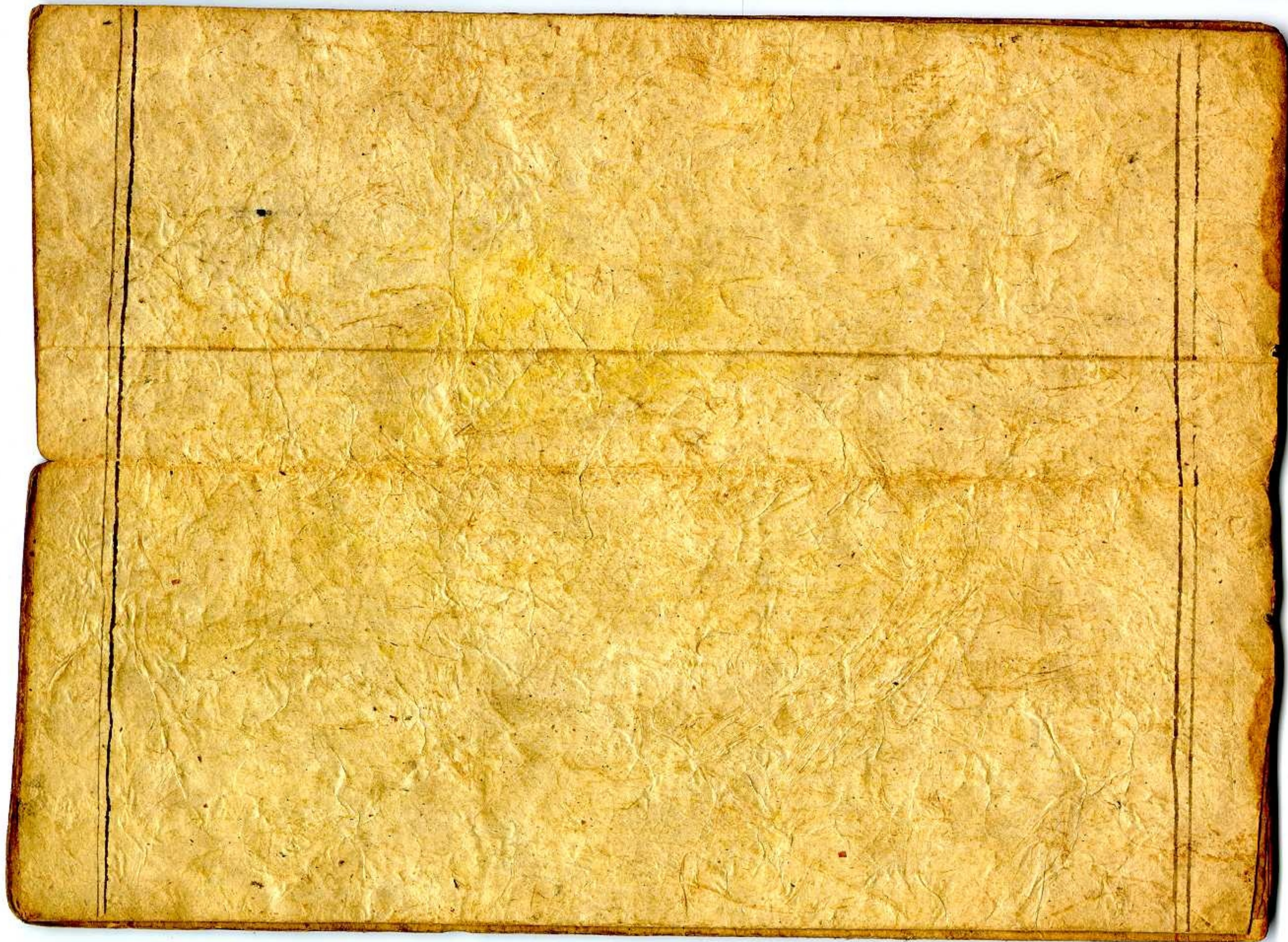


۱۲۱

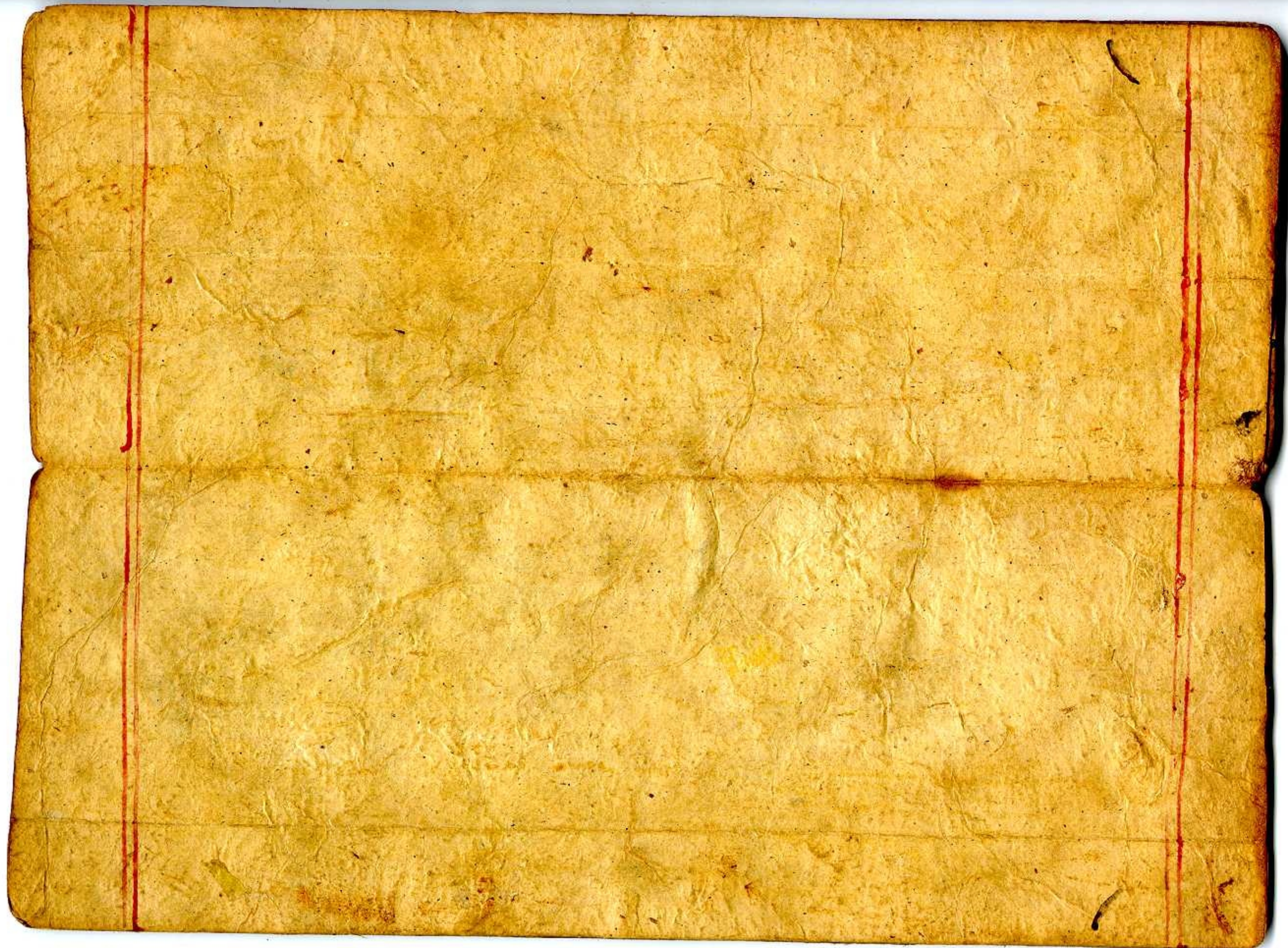


का









11002 11 3 6

五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ ३ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ ४ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ ५ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ ६ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ ७ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ ८ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ ९ ॥
 श्रीगुरुभक्त्युत्तमम् ॥ १० ॥



Handwritten text in a cursive script, likely a historical form of Hebrew or Aramaic, written on aged parchment. The text is organized into approximately seven horizontal lines, with some lines beginning with a double vertical bar (||) as a section marker. The script is dense and fluid, with many ligatures. The parchment shows signs of age, including discoloration and some staining.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form of Hebrew or Aramaic, written on aged parchment. This section contains approximately six horizontal lines of text. The script is consistent with the one on the top page. There is a prominent red ink blot or stain at the bottom right of the page, partially obscuring the final line of text. The parchment is aged and shows some wear.